अंतर सच्चा नेह लाया

गुरु की महिमा और गुरु भक्ति

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश अगस्त 1966 में प्रकाशित प्रवचन)

सन्तों की महिमा कोई सन्त ही जाने तो जाने, आम लोगों को क्या खबर हो सकती है कि वह क्या चीज़ होते हैं ? आप लोग खुशकिस्मत हैं कि आपको सन्तों की संगत में बैठने का अवसर मिला है। हम सन्तों की महिमा करना भी चाहें तो कहाँ तक करेंगे। एक उदाहरण है। जिले का डिप्टी कमिश्नर एक बार किसी छोटे से गाँव में गया। उस गाँव के लोगों के लिये पटवारी भी बादशाह था, उससे बड़ा अफसर उन्होंने कभी देखा ना था। डिप्टी कमिश्नर देखभाल का काम खत्म करके जब वापिस जाने लगा तो गाँव के बुर्जुगों ने, जो दुआ सलाम के लिये हाजिर हुए थे, डिप्टी कमिश्नर से कहा कि हम तेरे हक में दुआ करते हैं कि परमात्मा तुझे तरक्की दे और तुझे पटवारी बना दे। अब उन बेचारों को क्या खबर कि सैंकड़ों पटवारी डिप्टी कमिश्नर के दर पर भटकते फिरते हैं। यही हालत हमारी है। यह जो कुछ हम बयान कर रहे हैं, यह हम अपनी नजर के मुताबिक बयान कर रहे हैं, जितनी तरक्की अर्न्तमुख करे उतनी ही नज़र बनेगी हमारी।

श्री गुरु नानक साहब के पास एक खोजी आया था, परमार्थ का। आपने फरमाया ''भाई सत्संग किया करो।'' वह आदमी कुछ समय सत्संग में शामिल होता रहा। गुरु साहब ने पूछा संगत कैसी होती है। उसने जवाब दिया दो हाथ, दो पाँव वाले मनुष्यों का मजमा होता है। वह मनुष्य कुछ और समय सत्संग करता रहा। गुरु साहब ने फिर वही सवाल दुहराया। उसने जवाब दिया कि वहां सब इन्सान बैठे होते हैं। कुछ समय बाद फिर पूछा तो उस आदमी ने जवाब दिया कि सत् संगत में सब नेक पुरुष बैठे होते हैं। फिर कुछ और समय गुजरा उसे सत्संग करते हुए और वही सवाल दुहराया

गया तो उसने जवाब दिया कि सत् संगत में बैठे हुए सब परमात्मा दिखाई देते हैं ।

सन्त सन्त होते हैं। हमारी नज़र जितनी तरक्की करती है उतना ही हम उनकी शान को देखने के काबिल होते जाते हैं। जितनी महात्मा अपनी पहचान दे, अपना आपा दिखाये, उतना ही हम उसे देख और समझ सकते हैं, वरना अंधा आंख वाले को क्या देख सकता है और उसकी हकीकत को क्या जान सकता है ? छोटा बच्चा अकड़ में आकर कहे कि मैं माता को अच्छी तरह समझता और जानता हूं तो यह कैसे संभव हो सकता है। जितनी हमारी Development है जितनी हमारी नज़र है उतना ही हम महात्मा को देख सकते हैं। इसीलिये सन्तों ने निर्णय लिया है इस बात का। फरमाते हैं -

तू सुलतान कहां हौं मियां तेरी कौन बढ़ाई

यह क्या तारीफ हुई। यह तो उलटी निन्दा हुई। यह तो वही बात हुई डिप्टी कमिश्नर वाली, कि परमात्मा तुझे पटवारी बना दे! सन्त की गति को कौन जान सकता है।

तुलसी साहब फरमाते हैं -

जो कोई कहे हम सन्त को चीन्हा । तुलसी हाथ कान पर दीना ॥

और भी सब महात्मा यही कह रहे हैं। अलबत्ता सन्तों के बाहरी लक्षण हम देख सकते हैं। उनकी रहनी कैसी होती है ? उनका जीवन कैसा होता है ? उससे हम सबक ले सकते हैं। उनकी रहनी के मुताबिक अपना जीवन बना सकते हैं। सन्त सन्त होते हैं। वह अभय होते हैं। किसी से डरते नहीं। किसी से नफरत नहीं करते। उनका सबसे प्यार होता है। वह गला काटने वाले को भी क्षमा कर देते हैं। सो पहली बात जो उनके जीवन से मिलती है वह यह है कि सबसे प्यार करो। किसी से नफरत न करो। पूर्ण पुरुषों की रहनी से हमें कई कीमती बातें मालूम होती हैं। कुछ मोटी मोटी बातें अगर समझ लें और उन्हें अपने जीवन में धारण कर लें तो जिन्दगी बन जाये। बाकी अन्तरी चढ़ाई जिन पर वह दया करे वही कर सकते हैं। बड़ी मोटी

बात है कि शरीर से रूह को अलग करना मुश्किल है जब तक कोई पूर्ण पुरुष दया न करे, अपनी दया मेहर की नज़र का उभार देकर रूह को शरीर से ऊपर न लाये, अपनी ताकत और कोशिश से यह काम नहीं हो सकता। वह अपनी दया मेहर की नज़र का उभार देकर, मिनटो में रूह को शरीर से ऊपर ले आते हैं। बताओं इस चीज़ का हम क्या मोल दे सकते हैं? क्या शुक्राना अदा कर सकते हैं ?

ऐसे महापुरुषों के पास बैठो तो ठन्डक मिलती है। टिकाव मिलता है। जैसे बर्फ के पास बैठने से ठन्डक मिलती है ऐसे महापुरुषों की याद से भी शान्ति, एकाग्रता और ठन्डक मिलती है। आज के दिन, हम सब, पूर्ण पुरुष की सुख भरी प्यार भरी याद में बैंठे हैं जिनकी बरकत से आज दुनिया को परमार्थ की दौलत मिल रही है। महात्मा सब एक हैं। वह नूर के बच्चे होते हैं। जब आते हैं तो सारी दुनिया को रोशनी दे जाते हैं। बिजली की रोशनी एक है। एक बल्ब फ्यूज़ हो गया, दूसरा लग गया। पावर तो वही है। कभी नानक की शकल में प्रकट हुई, कभी तुलसी साहब, कभी स्वामीजी महाराज की शकल में। आगे और भी महापुरुष धरती पर आते रहेंगे। यह सिलसिला खत्म नहीं होगा। कुदरत का यह कानून अटल है कि जहां भूख है वहां रोटी है, जहां प्यास है, वहां पानी भी होगा। कुदरत की तरफ से यह उसूल चला आ रहा है। जब जब मालिक के पाने वाले पैदा हुए तब तब महापुरुष भी आते रहे मालिक के प्रेमियों को प्रभु प्रियतम से जोड़ने के लिये। जहां दर्द है वहां दवा भी है। यह नहीं कि आज से चार हज़ार वर्ष पहले जो इलाज मौजूद था वह आज नहीं है या आगे नहीं होगा। हमारे दिल में सब महापुरुषों के लिये इज्जत है जो आज दिन तक आये उनके लिये भी और जो आगे आयेंगे उन सबके लिये भी । यह आत्मविद्या का मज़मून है। अपने आपको जानना और परमात्मा से मिलना। इसके चाहने वाले जब भी पैदा हुए उनको रास्ता दिखाने का भी सामान पैदा हो गया।

Guru appears when the chela is ready.

सो आज के दिन हम सब भाई बहिन श्री हजूर महाराज बाबा

सावनसिंहजी की याद में बैठे हैं जिनके चरणों में बैठने का, हम में से बहुतों को अवसर मिला है। इस सत्संग का मतलब उनकी याद को ताजा करना है। महापुरुषों के जीवन की सबसे बड़ी गरज़ परोपकार है। वह जीवों का उद्धार करने के लिए आते हैं। हम सबको जो उनकी याद में बैठे हैं, यह चाहिये कि पल-पल शुकराना करें उनका उस बखशिश के लिये जो सबके लिये आम थी। उनके दरबार में हर समाज के लोग जाया करते थे। एक बार मैं यह देखने के लिए कि सत्संग में कितने लोग शामिल हुए होंगे, लंगर में गया। भण्डारे का सत्संग था। केवल एक चीज़ नमक को मैने लिया। मालूम हुआ कि एक दिन में केवल, एक वक्त में, नमक का खर्चा सात मन था। अब आप खुद अन्दाजा लगा सकते हो कि कितनी संगत होगी। उनमें हर ख्याल के लोग मौजूद थे। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई हर समाज के लोग वहां पर थे। सत्गुरु की तारीफ भी यही है।

सत्गुरु ऐसा जानिये, जो सबनां लये मिलाए जियो ।

जैसे मुर्गी अपने सब बच्चों को परों में समेट कर बैठती है इसी तरह महापुरुष भी सबको मिलाकर बैठते हैं। वह सब मनुष्य जाति को एक पिता परमात्मा की संतान समझते हैं। उनकी नज़र परमात्मा की नज़र होती है। उनकी नज़र में न कोई हिन्दू है न मुसलमान, सब आत्मा देहधारी हैं। वह यह नहीं पूछते कि तुम कौन हो। हजूर के चरणों में अमीर भी जाते थे, गरीब भी, कुलीन ब्राह्मण भी जाते थे, चमार भी, पढ़े लिखे भी जाते थे अनपढ़ गँवार भी, पर स्वप्न में भी किसी को ख्याल नहीं आता था कि हम कौन हैं। ऐसा प्रभाव था उस मण्डल का कि किसी को इस बात का होश ही न रहता था कि वह कौन है, कहां से आया है, किस जाति का है। क्योंकि उनके अपने अन्दर द्वैत का कोई अंग नहीं था। हिन्दू मुस्लिम की नज़र से देखना सन्तों के लिए Below dignity है, गिरी हुई बात है। उनकी नज़र में सब इन्सान आत्मा देहधारी हैं। आत्मा प्रभु परमात्मा की अंश है इसलिये सब इंसान आपस में भाई-भाई हैं।

They are members of the same family of God.

सन्त पद तो बड़ी ऊंची चीज़ है। मैं तो इतना ही कहूंगा कि मेरा सौभाग्य था, कि उनके चरणों में बैठने का अवसर मुझे मिला। उनके जीवन की छोटी छोटी बातों से बड़े बड़े सबक हमें मिलते हैं। जिन दिनों हजूर मरी पहाड़ी में निवास करते थे, उन दिनों की बात है। हजूर घर पर नहीं थे किसी काम से बाहर गए हुए थे। पीछे से कोई नास्तिक तपेदिक का रोगी रहने के लिए जगह तलाश करता हुआ आया। डॉक्टरों ने उसके लिए मरी पहाड़ में निवास करना आवश्यक बताया था। वह सब जगह फिरा पर किसी ने उसे रहने को जगह न दी। एक तो नास्तिक फिर तपेदिक का रोगी, सबने मना कर दिया। वह आदमी हजूर की कोठी पर भी पहुंचा। वहाँ सरदार गज्जासिंहजी मौजूद थे। उन्होंने भी उसको जवाब दे दिया।

जब वह आदमी हजूर की कोठी से वापस जा रहा था तो हजूर भी आ गए। उन्होंने दूर से देखा कि कोई आदमी कोठी से वापस चला जा रहा है। हजूर ने सरदार गज्जासिंहजी से पूछा कि वह कौन था तो उन्होंने बताया कि यह तपेदिक का मरीज है। डॉक्टरों ने इसके लिये मरी पहाड़ पर रहना आवश्यक बताया है, इसलिये यहां पर आया है। लेकिन यहां इसे कहीं भी जगह नहीं मिली क्योंकि यह आदमी नास्तिक है। सबने इसे जवाब दे दिया है। हजूर ने पूछा ''तुमने उसे क्या जवाब दिया ?'' गज्जासिंह ने कहा कि मैंने भी उसे मना कर दिया। हजूर ने फरमाया, ''गज्जासिंह ! उसमें आत्मा है कि नहीं।'' गज्जासिंह बोले। ''हाँ है।'' हजूर ने फिर कहा, देख गज्जासिंह, उस आदमी में भी आत्मा है और आत्मा परमात्मा की अंश है। उसे यह मालूम नहीं पर हमें तो यह बात मालूम है। उसको इस बात का पता नहीं तो उसका क्या कसूर ? हम तो देखते हैं '' हजूर ने उस आदमी को जगह दे दी। कितनी ऊंची नजर होती है सन्तों की। हम कहां और वह कहां ? महापुरुषों का जीवन नमूना है हमारे लिये। उनकी जिन्दगी से हमें सबक मिलता है कि सबसे प्यार रखो। किसी से नफरत न करो। वह सबसे प्यार करते हैं। आस्तिकों से भी और नास्तिकों से भी। जो इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ गये उनसे वह प्यार करते हैं तो उनसे भी प्यार करते हैं जो

इन्द्रियों के घाट की गन्दगी में पड़े हुए हैं। बच्चा कीचड़ में भर जाये तो माता उसे निकाल देगी क्या ? बच्चा नासमझ है। माता उसे प्यार से समझाती है। यही महात्मा का काम है।

जब जब महात्मा धरती पर आते रहे, संसार के लिये ठण्डक का, दया मेहर का समान बन गया। मरुस्थल की तपती रेत हो और तेज धूप पड़ रही हो और वहां कोई भूखा प्यासा, हांफता कांपता चला जा रहा हो, और उस रास्ते में ठंडे पानी के चश्में हरे-भरे पेड़ों वाला स्थान (Oasis) नजर आ जाये तो उसकी जान में जान पड़ जाती है। सन्त भी संसार के तपते हुए मरुस्थल में शीतल स्थान हैं। संसार के लोग, जो दुविधा में बहे जा रहे हैं, जब उनकी शरण में जाते हैं तो उन्हें ठंडक मिलती है,एकाग्रता और शान्ति मिलती है। सन्तों की हस्ती इस जलती हुई दुनिया में, हरे-भरे पेड़ की तरह है जिसके साये में बैठ कर सबको ठण्डक मिलती है। मौलाना रूम साहब फरमाते हैं -

दिला नजदे कसे बिनशीं, के ओ अज़दिल खबरदारद

कि किसी ऐसे के दर पर बैठो जिसे पता हो हमारे दिल की हालत का। जो दिलों का भेदी है।

बज़ेरे आं दरख्ते रौ गुलो गुलहाय तर दारद

किसी ऐसे पेड़ के साये बैठ जिस पर फल और महकते फूल हों। फिर आगे चलकर ताकीद की है -

दरीं बाज़ारे अत्तारां मगो दर मिस्ले बेकारा,
न दुकाने कसे बिनशीं के जिन्से अंगबीं दारद ।

अर्थात् बाजार में बेकारों की तरह इधर-उधर अवारा ना फिर। किसी ऐसी दुकान पर जाकर बैठ जहां शहद हो। आगे फरमाते हैं कि देग तो हर जगह उबल रहे हैं। मगर उन सबमें शहद नहीं है। बड़ा उपदेश हो रहा है। कथा वार्ता हो रही है। लोग जमा हैं। बड़े-बड़े महात्मा बने बैठे हैं जगह-जगह। मगर सचमुच की ठण्डक शायद ही कहीं मिले। बहुत कमयाब है यह चीज। इन्सान दो रोटी खाता है। आंखे रखता है। दिमाग रखता है। उसे सोचे-

समझे बिना विश्वास नहीं करना चाहिये। अपनी आंखों से काम लेना चाहिये। सच्चे महात्मा कमयाब तो जरूर हैं, मगर बीज नास नहीं है। हर जमाने में पूर्ण पुरुष आते रहते हैं। जिन महापुरुष के हम नामलेवा हैं और जिनकी याद में हम आज यहां बैठे हैं, हमें चाहिये कि उनकी प्यार भरी याद दिल में बसाये रखें। पल-पल शुक्राना करें उनका और जो रास्ता उन्होंने हमें बताया है, उस महापुरुष की दयामेहर का सहारा लेकर उस पर चलने की कोशिश करें। अपने जीवन की पड़ताल करो और देखो कि इतने साल तुम कहां थे और आज कहां हो ? सालों का सवाल नहीं, रोज पड़ताल करो और देखो कि कल हम कहां थे और आज कहां हैं ? मन का लिहाज़ न करो। बड़ी सख्ती से, बड़ी बेलिहाजी से जीवन की पड़ताल करो। जब तक अन्तर की गति ना बदले सब बेकार है। ऐसे महापुरुषों की यादगार मनाने की सही गरज़ यह है कि उनके जीवन के जो नमूने हमारे सामने हैं, उन्हें अपने जीवन में धारण करने की कोशिश करो। खाली मत्थे टेकने से कुछ न होगा। यह जबानी जमा खर्च का, बाहरी दिखावे का मजमून नहीं है। उस महापुरुष ने जिन्दगी का जो नमूना पेश किया हमारे सामने उसे अपने जीवन पर घटाओ। उसकी तरह अपना जीवन बनाओ। उन्होंने जो उपदेश दिये वह खाली दिमाग में ना भरते जाओ। उसे रूह की खुराक बनाओ। उसे खाकर हज़म करो। उस खुराक का सेवन करो और आत्मिक पहलवान बनो। किसी महात्मा की याद मनाने का असली मतलब यही है।

महात्माओं की बाणियां खाली पढ़ छोड़ने से कुछ न होगा। जो बात वह कहते हैं, जो उपदेश वह देते हैं, उसे अपने जीवन में धारण करो। वह इन्द्रियों के घाट से ऊपर रहते हैं। उनका खाली गुण गान करना काफी नहीं। उनके नमूने पर अपना जीवन बनाओ। उनका उपदेश धारण करो। इन्द्रियों के घाट से ऊपर आओ। विचार में भी मन खराब ना करो। सत्य और अहिंसा को धारण करो। अगर यह, सदाचार की जमीन बन जाये, परमार्थ न भी बने, अन्तर में ठण्डक प्रतीत होगी। मेरा अपना तजरबा है। मैं अभी हजूर के चरणों में नहीं पहुंचा था, मगर Self introspection को, जीवन की पड़ताल को, जरूरी समझता था। रोज अपने जीवन की पड़ताल करता था। चुन चुन

के गलतियां दूर करने की कोशिश करता था। जब गलतियां न रही, अन्तर की सफाई हो गई तो एक ठण्डक, एक नशा आने लगेगा। बाईबल में आया है -

"Blessed are the pure in heart for they shall see God."

मुबारिक हैं वह लोग, जिनके हृदय पवित्र हैं, केवल वही लोग प्रभु को देख सकते हैं। जीवन की पवित्रता से ही अन्तर रसाई होती है।

हमारे हजूर हमेशा फरमाया करते थे कि यह (जीव) ज़हर भी खाये जाता है और हाय-हाय भी करता जाता है और उस पर आगे और ज़हर खाये चला जाता है। हजूर के पास कई भाई जाते थे। अपनी गलतियां बता कर माफी मांगते थे। हाथ उठाकर हजूर फरमाते ''बस आगे ना करना।'' खाली दो लफ़ज थे। लेकिन दिलों पर मलहम लग जाती थी। खाली इतनी सी बात से संगत के दिल खड़े हो जाते थे। उनके लफ़जों में Charging का असर था। Out of the abundance of heart a man speaks जैसी अन्तर की अवस्था हो, उसका असर वचनों पर पड़ता है। जिसके अन्तर में टिकाव है, ठन्डक है, सबके लिये प्यार है, उसके लफ्जों में भी वही असर होगा। इस वक्त एक शब्द आ रहा है श्री गुरु रामदास चौथी पातशाही का ध्यान से सुनिये—

(1) अन्तर सच्चा नेह लाया प्रीतम आपने,
तन मन होय निहाल जां गुरु वेखाँ सामने।

श्री गुरु रामदासजी चौथी पातशाही की यह वाणी है, जिन्हें श्री गुरु अमरदासजी के चरणों में बैठना नसीब हुआ। उनमें गुरु भक्ति का अंग कमाल दरजे पर पहुंचा हुआ था। वैसे सब महात्मा गुरु भक्ति में पूर्ण होते हैं और उनका जीवन आदर्श होता है। लेकिन किसी में किसी चीज़ की झलक ज्यादा मिलती है। फरमाते हैं, मेरे अन्तर में सच्चा नेह, सच्चा प्यार है। दुनिया के लोगों के दिलों की पड़ताल करके देखो। उनके अन्तर में नाशवान चीजों का प्यार कूट-कूट कर भरा हुआ है। वह सत्संग में भी आते हैं, तो दुनिया के झगड़े बखेड़े साथ लेकर आते हैं। कहीं बच्चों के लिये कपड़े खरीदने हैं तो

कहीं बीमारों के लिये दवा लेनी है। उनके अन्तर में सच्चा प्यार नहीं। सच्चा प्यार यह है कि आत्मा का कल्याण हो। सो फरमाते हैं, श्री गुरु रामदासजी कि जहां भी नज़र मारो दुनिया नाशवान चीजों में फंसी हुई है। परन्तु मालिक की मेहर से मेरे अन्दर सच्ची प्रीति है। है नहीं, पैदा की गई है। कैसी प्रीति? सच्ची प्रीति। वह क्या ? अटल, लाफानी, सदा एक रस रहने वाली। मेरे अन्दर सच्चा प्रेम, सच्चा प्यार है। दिली ताल्लुक आत्मा का उस सच्चे प्रीतम से हो गया है। सच्चा प्रेम मेरे अन्दर बस गया है। कहां से आया है वह सच्चा प्रेम ? फरमाते हैं ''लाया प्रीतम आपने।'' मैं तो नाशवान चीजों में फंसा हुआ था। शरीर से, बाल बच्चों से बंधा हुआ था। मुझे समझ नहीं थी कि मैं क्या हूं, कहां से आया हूं, कहां जाना है मुझे ? जब उसके चरणों में आया, आंख खुली तो सच्ची प्रीति नज़र आने लगी। प्यार किसका होता है ? जिसका रस लिया हो उसी से प्यार होता है। फरमाते हैं, वह केवल दर्शन देकर हमारा तन मन निहाल नहीं करता, उसने सच्चे के साथ हमारा प्यार भी पैदा कर दिया है। उसकी कृपा से अन्तर में मालिक का रस आने लगा। जिसका रस लिया हो उससे प्यार भी पैदा होगा। सो शुक्राना कर रहे हैं कि मेरे प्रीतम ने मेरे अन्दर सच्चे की प्रीति पैदा कर दी जो अटल और अविनाशी है।

जोबन जान्दे न डरां, जे मेरी शौह संग प्रीत न जाय ।

यह शरीर तो नाशवान है। आज है, कल नहीं। डर है तो केवल यह कि उससे प्रेम बना रहे। सो प्रीतम का, उस महापुरुष का, शुकराना कर रहे हैं जिसके चरणों में बैठ कर सच्चे मालिक का प्रेम अन्तर में बस गया। यह उसकी बख्शिश है।

अपना प्यार आपे लाए

उसकी दया से आंख खुली, विवेक की आंख खुली जो सत् असत का निर्णय कर सकती है। वह सच्चा मालिक है जो, उसका परिचय मिला, उसका रस आया और उससे प्यार पैदा हुआ। अब सच-सच और झूठ झूठ नजर आता है, क्योंकि आंखों से सारे परदे उतर गए। फरमाते हैं श्री गुरु

रामदासजी, ''मेरा तन-मन होय निहाल'' कि जब मैं प्रीतम को, गुरु को देखता हूं तो मेरे तन-मन में ठन्डक की लहर दौड़ जाती है। अब यह एक ऐसा अनुभव है कि जिस पर यह अवस्था बीत चुकी है वही जानता है।

घायल की गति घायल जाने ।

जिन्हें ऐसे महापुरुष की आंख देखना नसीब हुआ है, और जिन्होंने उसके चरणों में बैठकर इस नशे का, इस आनन्द का अनुभव किया है वही इस गति को जान सकते हैं। फरमाते हैं, जब मैं प्रीतम को देखता हूं तो सिर से पांव तक मेरे अन्तर में ठंडक की लहर दौड़ जाती है। बच्चा जब माँ के सामने जाता है तो बेअख्तयार एक ठन्डक की लहर उसके अन्तर में दौड़ जाती है, हजूर के होते जब कभी वहां उनके चरणों में जाना नसीब होता था तो यह ठन्डक नसीब होती थी। दूर से उनकी पगड़ी का खाली एक कोना भी दिखाई दे जाता तो सिर से पांव तक ठन्डक की एक लहर दौड़ जाती थी। जब सामने आते तो हजूर फरमाते, ''सुनाओ आ गए ?'' बस इतनी सी बात से तपे हुए हृदय में ठन्डक पड़ जाती थी। जैसे बर्फ के तोदे के पास बैठने से बेअखत्यार ठन्डक महसूस होती है, ऐसे ही महापुरुषों के चरणों में जाने से ठन्डक मिलती है। कई लोग जिनकी आंखों में उनकी मनमोहन सूरत बस गई, खड़े के खड़े रह जाते, सुरत पिण्ड से ऊपर आ जाती और सारा शरीर सुन्न हो जाता । प्रेमी की आंख गुरु की सुहानी सुरत को और ही रंग में देखती है। वह अवस्था कहने सुनने से परे है। महात्माओं ने उदाहरण देकर समझाने का यत्न किया है। कहते हैं, प्याले में छलकती शराब को देख कर जैसे शराबी नशे में जाता है। उसे नए से नया रंग आता है, ऐसे ही शिष्य गुरु को देख कर नशे में जाता है, ग्रन्थ पोथियां इस गति की सार क्या जाने ? आगे कहते हैं कि लफ़्ज को यह ताकत ही नहीं दी गई कि प्रेम के नशे का वर्णन कर सके।

जिन्हें ऐसे महात्मा के चरणों में बैठने का अवसर ही नहीं मिला, वह क्या अन्दाजा कर सकेगा उनका। जिन्होंने हजूर को देखा है, वह उन्हें भूल नहीं सकते। ऐसे महापुरुष जब भी आते हैं, दुनिया के लिये ठन्डक का सामान बन

जाता है। एक बल्ब फ्यूज हो गया, दूसरा लग गया, रोशनी तो वही है। जहां रोशनी होती है पर्वाने आप से आप पहुंच जाते हैं। इतिहास बताता है श्री गुरु अमरदासजी 125 साल तक रहे। बड़ी भारी संगत थी उनकी। कहीं काबुल से, कही बर्मा से, कही लंका से, संगत आ रही है। दूर-दूर से संगतें आती थी। 18, 19 मरदों को और 12 बीबियों को प्रचार का हक़ मिला हुआ था। वह जाकर लोगों को शब्द दोहराते थे। इतनी भारी संगत थी जब श्री गुरु अमरदासजी ने चोला छोड़ा। उनके घर के लोगों ने श्री गुरु रामदासजी की बड़ी मुखालिफ़त (विरोध) की। श्री गुरु अमरदासजी के बेटे ने तो बड़ा ही विरोध किया। हर आदमी चाहता है कि यह दौलत घर में रहे। यह कोई नई बात नहीं। गुरु रामदासजी ने श्री गुरु अमरदासजी के बेटे को बुलाया, उनके पांव पर सिर रख दिया, फिर भी वह मुखालिफ़त से बाज न आया। वह बना बनाया डेरा छोड़ कर चल दिये। यह लोग जायदादों के भूखे नहीं होते। ऐसे महापुरुषों का जल्वा वही देख सकते हैं जिनके अन्तर में प्यार हो। जिनके हृदय सूने हैं प्यार से वह क्या अन्दाज़ा कर सकते हैं उनका? सो फरमाते हैं, श्री गुरु रामदासजी कि जब मैं गुरु को देखता हूं तो मेरा तन-मन निहाल हो जाता है। मौलाना रूम साहब फरमाते हैं कि अगर गौर से मुर्शिद (गुरु) को देखा जाय, तो पल-पल उनकी शकल बदलती रहती है। हज़रत बाहू फरमाते हैं, कि मेरे शरीर में जितने रोम हैं, वह सब आंखें बन जाएं और इन असंख्य आंखों से मैं गुरु का दर्शन करूं तो भी-

मुरशद वेख न रज्जा हूं ।

तो भी गुरु के दर्शनों की जो प्यास मेरे अन्तर में है, वह मिट नहीं सकती। देखने से, दिल दिल को राह बनती है और उसकी कशिश खेंचती है। यह गति क्या है, कोई घायल ही जाने तो जाने, दूसरा कैसे जान सकता है? हजूर के चरणों में जिन मरदों और बीबियों को जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है उनकी नजरों में हजूर के सिवा और कौन समा सकता है! गुरुमुख का एक ही गुरु होता है जैसे पतिव्रता स्त्री का एक ही पति होता है।

माधो दिल तो एक है, भावें जहाँ लगाए ।
भावें गुरु की भक्ति कर, भावें विषय कमाय ॥

एक वक्त में एक ही काम एकाग्र चित्त हो के किया जा सकता है ।

एक दिल था सो ले गए श्याम, अब कौन भजे जगदीश ।

हजूर स्वामीजी महाराज फर्माते हैं, कि जब एक को कुल मालिक कह चुके तो और कुल मालिक कहां से आए ? जिन्हें ऐसे महापुरुष के चरणों में बैठना नसीब हुआ है, उन्हें चाहिये कि वह उन्हीं का प्यार, भरोसा मन में रखे और उस सबक को याद करे जो उस महापुरुष ने उन्हें सिखाया है। हजूर फरमाया करते थे, कि गुरु एक परदेदार औरत की तरह है। उसने बाहर नहीं आना। बच्चा बाहर रोता-चिल्लाता रहे, वह कहती है ''खस्माँ नू खाय'' (यह लफ़्ज थे हजूर के) पर जब बच्चा दरवाजे पर आ जाये तो वह हाथ बढ़ाकर उसे अन्दर खेंच लेती है। वह दरवाजा कहां है ?

अन्धे दर की खबर न पाई

यह वही दरवाजा है, जहां पिण्ड से अण्ड और ब्रह्मण्ड बल्कि सचखण्ड जाने का रास्ता खुलता है। यहां वह (पूर्ण पुरुष, सत्गुरु) दोनों हाथों से दया मेहर लिये खड़ा हमारी इन्तजार कर रहा है। गुरु मरता नहीं ।

गुरु मुख आवे जावे निसंग

वह तो रोज़ तय करता है मौत का सफ़र। अगर गुरु मरता है तो आपको क्या देगा वह ? जो स्वयं जाता है ऊपर आध्यात्मिक मण्डलों में वह तुम्हें भी वहां ले जा सकता है।

खेंचे सुरत गुरु बलवान

उसकी याद में बैठो। वह तुम्हारी सुरत को (आत्मा को) इस तरह पिण्ड से ऊपर ले आएगा, जिस तरह कोई मक्खन से बाल निकाल लेता है। तुम्हें पता भी नहीं लगेगा कि कब ऊपर आ गए। गुरु की याद में बैठो। दुनिया के सब सामान बदल रहे हैं जिनकी खातिर भाई-भाई में, और पिता पुत्र में झगड़े हैं। हजूर फरमाया करते थे कि स्त्री पति को सब कुछ दे देती है, दिल

नहीं देती। यहां दिल देना पड़ता है। सब कुछ दो दुनिया को मगर दिल न दो। दिल खुदा की अमानत है। सो फरमाते हैं श्री गुरु रामदासजी कि वह जो सच्चा है, अमर है, अविनाशी है। उससे हमारा प्यार बना दिया गुरु ने। विवेक बुद्धि खुल गई। वह आंख बन गई, जिससे उसकी झलक दिखाई देती है। अन्तर में उसका रस आया। जिसका रस लिया, कुदरती तौर पर उसका प्यार भी बना। बना नहीं, बना दिया गया गुरु की कृपा से। ऐसे गुरु को देखता हूं तो मेरा तन-मन निहाल हो जाता है। श्री गुरु रामदासजी की यह हालत थी कि गुरु को पल भर के लिये भी आंखों से ओझल नहीं होने देते थे। श्री गुरु अमरदासजी शौच के लिये जाते थे तो भी यह दूर बैठे उन्हें देखते रहते थे। यह रंग क्या है, किसी नशेबाज़ से पूछो !

(2) मैं हर- हर नाम विसाह, मैं हर-हर नाम विसाह ।
गुर पूरे ते पाइया, अमृत अगम अथाह ।।

फरमाते हैं ऐसे गुरु से हमें मिला क्या ? वह सच का प्यार क्या था? फरमाते हैं, कि सच का प्यार जो बना तो नाम हमारा जीवन आधार बन गया। जिसकी कृपा से नाम जीवन आधार बना मेरा, उसे देख-देख के मेरा तन-मन निहाल होता है। मैं नशे में होता हूं। यह अवस्था अकथनीय है, अवर्णनीय है, पर सभी महात्मा इसका इशारा देते चले आ रहे हैं कि शायद हमारी समझ में आ जाएगा। इकबाल कहता है -

कभी ए हकीकतते मुन्तजिर, नजर आ लिबासे मजाज में ।
के हजारों सजदे तड़प रहे हैं, मेरी जिबीने नयाज में ।

'ब्रह्म बोले काया के ओहले, काया बिन ब्रह्म क्या बोले'। हमको तुझे पाना है। हम इतने ऊंचे नहीं उठ सकते कि तुझ तक पहुंच सके। हमारी ही तरह इन्सानी शकल बना के सामने आ, कि मेरे सिर में हजारों सजदे तड़प रहे हैं, तेरे चरणों पर सीस निवाने की भावना तड़प रही है। यही हालत गोपियों की थी जब उन्हें कृष्ण का वियोग सहना पड़ा। विरह अजीब चीज है। इसका रस वही जाने जिसे मालिक यह रोग लगाये। हाँ तो गोपियाँ जब कृष्ण के विरह में बहुत बेचैन हो गई तो कृष्ण ने ऊधो को भेजा कि जाकर गोपियों

को ज्ञान दो कि उनका मन शान्त हो। ऊधो गए, गोपियों को ज्ञान ध्यान की बातें सुनाई। वह बड़े ध्यान से ऊधो की बातें सुनती रही। सब सुन के वह बोली, तुम सच कहते हो। जो कहते हो, ठीक कहते हो पर हमें तो उसके दर्शन की प्यास है। हम तो कृष्ण को देखना चाहती हैं। हमारी इस तृष्णा का तुम्हारे पास क्या जवाब है। यह ज्ञान ध्यान सब ठीक है पर -

जो सूरत का है दीवाना, वह परचे कैसे बातन से ।

जिनको अवसर मिला है, ऐसे महापुरुष की आंख देखने का, वह अब उस नशे को ढूंढते हैं। पर वह बात अब कहाँ ? हां याद करने से भी ठण्डक मिलती है। सो फरमाते हैं कि सच्चे का प्यार अन्तर से बन गया तो नाम हमारा जीवन आधार बन गया। नाम क्या ? वह परिपूर्ण सत्ता जो सारी सृष्टि को, खण्डों, ब्रह्माण्डों को बनाने वाली है और सबको आधार दे रही है। वह मालिक अनाम है, अशब्द है। अनाम से नाम हुआ, अशब्द से शब्द रूप हुआ और यह सारी सृष्टि बनी। उसके आधार पर हमारी आत्मा का सम्बन्ध शरीर से कायम है। यह सारे खण्ड ब्रह्मण्ड उसके आधार पर खड़े हैं। फरमाते हैं, सच्चे नाम से हमारा प्यार हो गया। अब वह हमारा जीवन आधार बन गया है । वह नाम कहां से मिला ? फिर स्पष्ट कर रहे हैं, ताकि इस बारे में कोई शक न रह जाय। फरमाते हैं, **''पूरे गुरु ते पाइया, अमृत अगम अथाह।''** पूरे गुरु की कृपा से। प्रभु से जुड़ना किसी पूरे महात्मा की बख़शिश से ही हो सकता है। आगे तारीफ करते हैं कि वह सच्चा नाम कैसा है ? वह अमृत है, अमर कर देने वाला है, हमेशा की जिन्दगी देने वाला है। अटल, अविनाशी है।

एको निहचल नाम धन, होर धन आवे जाए ।

और जो धन है वह आए और चले गए। नाम वह दौलत है जिसे न आग जला सकती है, न पानी गला सकता है न चोर चुरा सकता है। जब तक तुम इन्द्रियों के घाट से ऊपर न आओ उसका परिचय नहीं मिलता। वह इन्द्रियों के घाट का मजमून नहीं।

अदृष्ट, अगोचर नाम अपारा ।

वह इन इन्द्रियों से न तो देखा जा सकता है न अनुभव किया जा सकता है। यह दौलत कहां से मिली ? फरमाते हैं पूरे गुरु से मिली ? यह दौलत। गुरु क्या करता है ? वह रूह को इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाकर नाम पावर से जोड़ देता है। इसीलिये कहा है-

बिन गुरु पूरे कोई न पावे, लख कोटि जे करम कमावे ।

कोई समर्थ पुरुष जो स्वयं इन्द्रियों की घाट से ऊपर आया हो वह आपको भी पिण्ड से ऊपर लाकर नाम से जोड़ सकता है, नाम का अनुभव दे सकता है। ऐसे महापुरुष का नाम कुछ रख लो। उसे उस्ताद कह लो, टीचर कह लो, गुरु कह लो, महात्मा कह लो। यह पराविद्या का मजमून है। जब तक पिण्ड से ऊपर न आओ रास्ता नहीं मिलता। इन्द्रियों के साधन द्वारा कोई इन्द्रियों के घाट से ऊपर नहीं जा सकता। जब तब कोई समर्थ पुरुष अपनी तवज्जा का उभार देकर पिण्ड से ऊपर न लावे यह वहां जा ही नहीं सकता।

इसलिये फरमाते हैं, कि जब मैं ऐसे समर्थ महात्मा को देखता हूं, तो मेरा तन मन निहाल हो जाता है। जैसे जैसे उसे देखता हूं, नए से नया रंग मिलता है मुझे । आगे लिखा है 'इकराहो'। गुरु ग्रन्थ साहब की जिस तुक के आगे यह शब्द लिखा हो, उसका अर्थ है कि यह अनुभव सिद्ध बात है। इसे हृदय में धारण कर लो। इस उपदेश को पल्ले बाँध लो। यहां पूरे गुरु का शब्द लिखा है। यह पूरे गुरु की महिमा है, So-called, तथाकथित गुरुओं की यह बात नहीं। दो आधी रोटियां मिलाकर एक पूरी रोटी बन जाती है, मगर सौ अधूरे गुरु मिलकर एक पूरा गुरु नहीं बनता। वह देखने में हमारी आपकी तरह दो हाथ पांव रखने वाला मनुष्य ही होता है मगर उसकी पदवी बड़ी ऊंची है। वह मालिक में अभेद हो चुका है। उसमें और मालिक में कोई फर्क नहीं रह जाता। यह Development का सवाल है।

Every saint has his past, every sinner a future.

उसका पिछला जीवन है। जो आज पहली जमात में पढ़ रहा है वह मदद और हिदायत से एक दिन एम.ए. पास कर लेगा। जो आज एम.ए. है वह कभी

पहली जमात में पढ़ता होगा। गुरु से गुरु पैदा होता है। अगर बाकायदा मदद और हिदायत मिलती रहे तो जो आज पहली जमात में पढ़ता है वह एक दिन एम.ए. पास हो जायेगा।

गुरु सिख, सिख गुरु है, एको गुरु उपदेश चलाई ।

गुरु पूरा सिख होता है, और पूरा सिख गुरु में अभेद हो जाता है। गुरु में और उसमें कोई भेद नहीं रह जाता। सो श्री गुरु रामदासजी फरमा रहे हैं, कि यह दौलत हमें पूरे गुरु की कृपा से मिली। यह परम्परा चली आ रही है।

धुर ख़समें का हुकम पया, बिन सत्गुरु चेतया न जाय।

यह असूल बना दिया है मालिक ने, कि जो आप पहुंचा हुआ है मालिक तक, जो आप मिला हुआ है उससे, वही दूसरों को भी उससे जोड़ सकता है। जब तक कोई सत्स्वरूप महात्मा न मिले, यह (जीव) अपने आप पिण्ड से ऊपर नहीं आ सकता और इसे अपने आपे की सूझत नहीं मिल सकती।

गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि यदि तुम ज्ञान चाहते हो तो किसी ऐसे महात्मा के पास जाओ जिसने अन्तर में प्रभु के दर्शन किए हों। वह कोई भी हो। जो आप इन्द्रियों के घाट से ऊपर नहीं गया, उससे यह आशा रखना कि उससे उपदेश लेकर तुम पिण्ड, अण्ड और ब्रह्मण्ड के पार जा सकते हो, फिजूल है। अधूरे गुरु के पास जाकर सारी उमर इन्द्रियों के घाट पर पड़े रहोगे। जो आप इन्द्रियों से ऊपर नहीं आया वह तुम्हें कैसे ऊपर ला सकता है? यह काम पूरे गुरु का है। उसका दरवाजा सबके लिये खुला है। वहां पापी और पुण्यवान का कोई सवाल नहीं। धोबी घाट पर कोई भी मैले कपड़े ले जाये। कभी किसी ने सुना है धोबी को यह कहते कि तेली का या हलवाई का कपड़ा है मैं इसे नहीं धो सकता। वह देखता है कि कपड़े में सफेदी है। मैं एक नहीं दो भट्टी देकर इसमें से सफेदी निकाल लूंगा। उसका रोज का काम है। यह अहंकार के वचन नहीं। उसका यह रोज का काम है। उसने हज़ारों की मैल धो दी।

भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है कि पुण्य कर्म हो या पाप कर्म, जीव को बान्धने के लिए दोनों एक समान हैं, जैसे लोहे की बेड़ी हो या सोने की बेड़ी, दोनों ही बन्धन का कारण है। नेक पाक, सात्विक जीवन, जीना है परमार्थ का, (यह नींव है परमार्थ की), हमें त्रिगुणातीत अवस्था को प्राप्त करना है। हमें निःकर्म होना है। सत्गुरु हमें सत् का

अनुभव उसका परिचय देता है। साथ में मदद देता है। यह नहीं कि उपदेश दिया और किनारे हो गए।

महात्माओं के चरणों में ज्यादातर पापी, चोर, डाकू आते हैं। हजूर के जमाने में एक डाकू था, बड़ा लम्बा तगड़ा। वह लोगों को पकड़ के दरिया में गोता देता था। एक बार अचानक हजूर का सत्संग सुना। होश आया। जब समझ आई तो उसका कायदा था कि मुंह पर कपड़ा डाल घन्टों स्तुति करता रहता था हजूर की। श्रीगुरु अर्जुन साहब की संगत में भी कुछ डाकू थे। बादशाह के पास शिकायत हुई कि इन्होंने डाकू जमा कर रखे हैं अपने पास। गुरु अर्जुन साहब ने जवाब दिया कि कभी होंगे डाकू, अब नहीं हैं। उनके चरणों में जाने से जीवन बदल जाता है।

(3) हौं सत्गुरु वेख विगुत्तेया, हर नामे लगा प्यार ।

फरमाते हैं मेरे अन्तर नाम का प्यार उसका रस बन गया। अब जिसकी कृपा से यह अवस्था बनी उसे देखता हूं तो सिर से पांव तक नशे की लहर दौड़ जाती है। इसका अनुभव आप में सैंकड़ों भाईयों ने किया होगा जिन्हें हजूर बाबा सावनसिंहजी महाराज के चरणों में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वहां जाते थे तो ठन्डक मिलती थी। वह ब्यास में होते, मैं लाहौर में, तो कई बार बड़ी जबरदस्त ठन्डक की लहर महसूस होती। मैं समय नोट कर लेता। फिर जब ब्यास जाना होता तो पता लगता कि हजूर ने उस समय याद किया था। दिल से दिल की राह बनने का सवाल है। ऐसे पात्र बनने का सवाल है जो Receptive हो, जिसमें असर कबूल करने की गुंजाइश हो। इसके लिये जरूरी है कि दो दिलों की एक जैसी Vibrations (लहरें) हों। इस अवस्था को प्राप्त करने का जरिया (साधन) केवल प्रेम है। यहां कोई चमत्कार नहीं, यह प्रकृति के नियम हैं, पर ऐसे नियम जिनकी हमें कोई खबर नहीं। श्री गुरु रामदासजी, गुरु और शिष्य का ताल्लुक बता रहे हैं। फरमाते हैं, जब मैं उसको देखता हूं तो सिर से पांव तक ठण्डक की लहर दौड़ जाती है मेरे तन मन में। माफ कीजियेगा। इस चीज की कीमत कोई क्या दे सकता है ? किताबों में इस अवस्था के केवल इशारे मिल रहे हैं, मगर वह चीज किताबों से नहीं मिल सकती। Life gives life जिन्दगी, जिन्दगी से ही आयेगी।

(4) कृपा करके मेलियन, पाया मोख द्वार ।

अब फरमाते हैं कि हम उसे कैसे पा सकते अगर वह दया करके आप ही अपना

हाथ हमें न पकड़ाता। आंख वाला दया करके आप ही अपना हाथ पकड़ाए तो पकड़ाए वरना अन्धा आंख वाले को क्या पकड़ सकता है ? फरमाते हैं कि उसने, पूर्ण पुरुष ने दया करके हमें अपनी पहचान दी और मोक्ष का दरवाजा हम पर खोल दिया। यह हमारी कोशिश और लियाकत का नतीजा नहीं। यह निरोल (खालिस) बखशिश थी उसकी कि उसने दया करके मालिक के रंग में रंग दिया।

(5) सत्गुरु बरती नाम का, जे मिले ताँ तन मन देहो।

सत्गुरु क्या होता है ? वह नाम मुजस्सम (सदेह) है। अगर वह मिल जाए तो मैं क्या दूंगा उसे ? फरमाते हैं मैं तन मन हवाले कर दूंगा उसके। नाम मिलता ही कब है जब तक तन मन हवाले न करो।

मन थिर, तन थिर, वचन थिर, सुरत निरत थिर होय ,
कहे कबीर इस पलक को, कल्प न पावे कोय ।

महर्षि अष्टावक्र ने राजा जनक को उपदेश दिया तो यही भेद समझाया था उन्हें। राजा ने ऋषियों मुनियों महात्माओं की सभा बुलाई थी। उसका सवाल यह था कि कोई मुझे ज्ञान दे, इतनी देर में जितनी देर में घोड़े की एक रकाब में पांव डालकर दूसरी रकाब में पांव डाला जाता है। अब सब हैरान। किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि गुरु के लिए जो आसन बिछा हुआ था उसे ग्रहण कर ले, हालांकि हजार गौवे और इतनी ही स्वर्ण मुद्राऐं इनाम मुकर्रर था राजा की तरफ से। महर्षि अष्टावक्र जिनके शरीर में आठ बल पड़ते थे और इसीलिए अष्टावक्र कहलाते थे, मगर वह थे अनुभवी महापुरुष, उस सभा में आए और आते ही गुरु के आसन पर बैठ गए। आलम (विद्वान) और आमिल (अनुभवी) में बड़ा फर्क है। वह करके दिखा देता है। उसका रोज का काम है। जब अष्टावक्र सभा में आए तो उनके टेढ़े-मेढ़े शरीर को देख कर सारे सभासद हंस पड़े। वह क्यों हंसे ? क्योंकि उनके मन में अहंकार था कि हम विद्वान, तत्वज्ञानी यहां बैठे हैं। हमारी सभा में यह कुबड़ा कहां से आन धमका। यह लोग (महात्मा) बड़े लाधड़क होते हैं। महर्षि अष्टावक्र ने राजा से पूछा, ''राजन् तुम ज्ञान पाना चाहते हो तो यह चमारों की सभा क्यों बुला रखी है तुमने ?'' ''चमारों की सभा'' राजा ने चकित हो कर कहा।

''यह चमार ही तो है जिनकी नजर चमड़े पर है रूह पर नहीं।'' ऋषि ने फिर राजा से पूछा, तुम ज्ञान प्राप्त करने के लिये तैयार हो। जो कुरबानी करनी पड़े करोगे ? राजा ने आखिर सोच समझ कर निश्चय किया था। ऋषि ने फिर कहा कि इसके लिए तुम्हें तीन चीजें देनी होंगी, तन, मन और धन। राजा को ज्ञान की जरूरत थी। यहां तो जरूरत का मोल है। राजा ने पानी की चुल्ली भरी और संकल्प किया, कि मैं अपना तन, मन और धन ऋषि के हवाले करता हूं। ऋषि ने कहा, ''हे राजन् जहां सभाजनों के जूते पड़े हैं वहां जाकर बैठ जाओ।'' लोक लाज परमार्थ के रस्ते में जबरदस्त रुकावट है। राजा जनक का अपना राज दरबार, वहां सबसे नीची जगह पर बैठना बड़ी बहादुरी का काम था। उसने मन में सोचा कि तन तो मैं ऋषि को दे चुका । अब वह चाहे जहां बिठा दे। जाकर जूतों में बैठ गया। ऋषि ने इस पर भी बस नहीं की। महात्मा जब आपरेशन करने पर आते हैं तो खूब अच्छी तरह सफाई करते हैं ताकि जरा मैल बाकी न रह जाए।

ऋषि ने पूछा ''राजन ! तुम इस वक्त कहां बैठे हो ?' वह उसके मुंह से भी कहलवाना चाहता था कि मैं कहां बैठा हूं।'' राजा ने कहा, ''महाराज,मैं यहां सबसे नीची जगह पर बैठा हूं।'' ऋषि ने कहा कि अब इस तरफ मन न ले जाओ। राजा ने कहा कि मैं आंखों से देख रहा हूं कि सभा में मेरे अमीर वजीर और दरबारी बैठे हैं, तो मेरा मन उधर चला जाता है। ऋषि ने कहा कि आंखें बन्द कर लो। राजा ने फिर शिकायत की कि शक्लें दिखाई नहीं देती पर लोगों की आवाजें अब भी कानों में आ रही है, जिससे मेरा ध्यान उनमें चला जाता है। ऋषि ने कहा कि कान भी बन्द कर लो। थोड़ी देर बाद ऋषि ने पूछा, ' 'राजन, तुम अब कहां हो ?''

राजा जनक ने जवाब दिया, ''मेरी अवस्था उस कव्वे की सी है जो जहाज के मिस्तौल पर बैठा है। वह वहां से उड़ता है तो चारों तरफ पानी ही पानी देखता है और हारकर वापस जहाज पर आ जाता है। मेरा मन भी बाहर दौड़ता है। कभी महलों में, कभी रानियों में, कभी धन दौलत के खजानों में। फिर मैं सोचता हूं कि यह सब कुछ तो मैं दे चुका हूं।'' महर्षि

अष्टावक्र बोले, ''राजन् तुम मन भी मुझे दे चुके हो। मेरे मन से फुरना न फुरो। इसे अन्तर में टिकाओ।'' महर्षि ने तवज्जा देकर राजा की सुरत को पिण्ड से ऊपर खेंच लिया। उसके दर पर एकाग्रचित्त होकर बैठो। जैसे मक्खन से बाल निकाला जाता है इसी तरह पूर्ण पुरुष अपनी तवज्जा का उभार देकर पलक झपकते में सुरत को पिण्ड से ऊपर ले आता है।

खेंचे सुरत गुरु बलवान

महर्षि अष्टावक्र ने जितनी देर मुनासिब समझा राजा जनक की सुरत को ऊपर रहने दिया, फिर नीचे उतार कर पूछा, ''राजन ज्ञान हो गया।'' राजा जनक ने जवाब दिया, ''हां महाराज''। ज्ञान का पाना यह है कि लेने वाला गवाही दे कि मुझे ज्ञान मिला। इसमें किसी दूसरे की गवाही की जरूरत नहीं रहती ।

सो गुरु रामदासजी फरमाते हैं, कि आत्म ज्ञान की यह दौलत जो मुझे दे मैं अपना तन और मन उस पर न्यौछावर कर दूंगा। यह दोनों चीजें दिए बिना यहां काम नहीं बनता। सरमद से किसी ने पूछा कि मुरशिद ने क्या दिया तुम्हें। वह बोला -

तन दादम व जां दादम व ईमां दादम ।

अर्थात् मैंने अपना तन उसके हवाले कर दिया। बाल बच्चे, दोस्त, रिश्तेदार, संसार के सारे कार्य-व्यवहार और झगड़े टन्टे इस शरीर के साथ थे। तन दे दिया तो इन सब झगड़ों से छुट्टी मिल गई। तन से बड़ा झगड़ा जान का था वह भी उसके हवाले कर दी। इन दोनों से बड़ी चीज थी ईमान जिसके कारण लाखों जाने खत्म करने को तैयार हो जाता है, वह हवाले कर दिया गुरु के। अब गुरु जो बात कहता है वही मेरा ईमान है, वही मेरा वेद कुरान है। सरमद कहते हैं कि यही सारे बोझ थे सिर पर। यह सारे भार उतर गये तो मैं हर तरह से निश्चिन्त हो गया। बताओ इससे बड़ा फायदा क्या होगा। कितने साफ और स्पष्ट शब्दों में यह उपदेश हमारे सामने रखते हैं। इस पर विचार करने की जरूरत है।

(6) जो पूरब होए लिखिया, तां अमृत सहजे पियो।

इस रस को कौन पी सकता है ? मालिक जिस पर आप दया करे वही इस रस को भी पी सकता है।

धुर कर्म पाया तुध जिनको, से नाम हर के लागे।

जब तक मालिक न चाहे तब तक न गुरु मिलता है न नाम। पूरे महात्मा का मिलना मालिक की अपार दया हो, तभी होता है जिसे मालिक अपने से मिलाना चाहता है उसे किसी ऐसे मिले हुए से मिला देता है, किसी ऐसे महापुरुष से मिला देता है जो उससे (मालिक से) मिला हुआ है। जिन्हें ऐसा महापुरुष मिल भी गया और वह फिर भी उसका फायदा नहीं उठाते उनकी कितनी बदकिस्मती है।

(7) सुत्तेयां गुर सालाहिये, उठदेयां भी गुर सालाहो।

फरमाते हैं कि उठते-बैठते, जागते-सोते गुरु को याद करो। सोते-जागते हमें क्या याद रहता है ? जो हमारे मन में है उसी की याद रहेगी। रात को सोते हुए यही ख्याल रहता है कि अमुक काम पूरा नहीं हुआ और जागते भी वही दुनिया के झगड़े हैं। फरमाते हैं उसकी (गुरु की) मीठी याद में सो जाओ। सारी रात वह याद तुम्हारे रोम-रोम में फिरेगी। सोते में भी उसकी याद बनी रहेगी। जो शिष्य परमार्थ में उन्नति करना चाहता है उसे गुरु की याद करनी चाहिये। इससे क्या मिलता है। इससे आत्मा को खुराक मिलती है।

As you think so you become.

जिसका तुम चिन्तन करोगे, उसका रूप हो जाओगे। जैसे-जैसे याद बनती जायेगी, गुरु में तुम्हारी पैबन्द लगती जायगी। एक पेड़ की टहनी लेकर किसी दूसरे पेड़ में उसकी पैबन्द (कलम) लगा दी जाय तो उस पेड़ में जो फल लगेगा उसकी सुरत तो वही रहेगी पर स्वाद उस पेड़ का होगा जिसकी पैबन्द लगाई गई है। जिसकी पैबन्द गुरु से लग गई उसका काम बन गया। मसीह ने एक बार अपने शिष्यों से कहा -

I am the vines ye are the branches. अर्थात् मैं अंगूर का पेड़ हूं। तुम पेड़ की टहनियां हो।

"As long as thou remain embedded in the tree thou shalt bear forth abundant fruit."

जब तक तुम पेड़ से जुड़े रहोगे खूब फल लाओगे। जो टहनी पेड़ से कट गई, वह फल नहीं ला सकती, इसलिये -

Thou cannot do without me. मेरे बिना तुम्हारा काम नहीं बनेगा।

लगातार याद से यह गुरु का रंग और उसका असर लेता है। याद से प्रेम बनता है। माता बच्चे का नाम न भी ले तो भी थोड़ी देर के लिये वह आंखों से ओझल हो जाय, तो वह तड़प उठती है। बच्चा उसके दिल दिमाग में बस रहा है। यह गति लगातार याद से बन गई। यदि गुरु की याद तुम्हारे दिल दिमाग में बस जाए तो Karmic law के अनुसार मर कर कहां जायेगा ? वह जन्म मरण से आजाद है तो तुम्हें जन्म मरण में लाने वाला कौन है ? मगर इसके लिये गुरसिख बनना पड़ेगा। अब सिख की क्या हालत है ? उसके अन्तर में दुनिया भर के प्यार भरे पड़े हैं। शरीर का प्यार, बाल-बच्चों का प्यार, धन दौलत, जायदादों का प्यार ! हमारे हजूर उदाहरण दिया करते थे, कि एक नाली हो। उसमें पानी भरा हो। नाली में कई छेद हो जिनसे बाहर की हवा अन्दर आकर पानी में बुलबले उठाती हो, तो उसमें अक्स दिखाई देगा क्या ? गुरु बाहर से हटा कर अन्तर्मुख करता है। बाहर के सारे दरवाजे जिनसे हम फैलाओं में जा रहे हैं बन्द करके हमें अन्तर्मुख अपने आपे की सूझत दिलाता है। गुरु का प्यार पैदा करने का बड़ा साधन क्या है ? लगातार याद उसकी, परमात्मा को हमने देखा नहीं। गुरु में वह प्रकट है। गुरु की याद से ही प्रभु की याद बनेगी। जो गुरु को भूल जाता है वह परमात्मा को भी भूल जाता है। पूर्ण पुरुष की याद से उसके अन्तर की जो हालत है, उसकी झलक मिलती है। उसके अन्तर में टिकाव है, मस्ती है प्रभु प्रेम की। उसका अक्स तुम पर भी पड़ेगा। सो जब भी भजन में बैठो, उसके (पूर्ण पुरुष के) हवाले होकर बैठो। हम इस तरह बैठते हैं, जैसे कोई बेगार काटता है। तुम्हारा काम है उसके दरवाजे पर बैठना। ले जाने वाला आप ले जायेगा। जिसे ले जाना है, उसका शुक्राना करो। गुरु मण्डल बनाओ। उसकी याद में, उसके हवाले होकर बैठो। हम जमनास्टिक करते हैं। जोर जबरदस्ती से अन्तर चढ़ाई करना चाहते हैं। यह बखशिश का मजमून है। परमात्मा प्रेम है। आत्मा भी प्रेममय

है और परमात्मा से मिलने का जरिया भी प्रेम है। यह जितने जप-तप संयम बनाये गये हैं उनका उद्देश्य यही है कि प्यार बने अन्तर में। गुरु की याद का उद्देश्य यही है कि गुरु से प्यार बने। उसके दिल से हमारे दिल को राह बने।

मौलाना रूम साहब फरमाते हैं,''सतगुरु प्रीतम से, प्यारे मुरशिद से मेरी पेबन्द लग गई। अब मैं अमर जीवन के समुद्र में गोते खा रहा हूं। मुझे मौत का भय नहीं रहा।''

यह लफज फेंकने वाले नहीं। यह जो उपदेश तुम सुन रहे हो, इसे अपने जीवन में धारण करो। उस समरथ पुरुष के आगे प्रार्थना करो कि हे महात्मा, आपने हमें जो रस्ता दिया था हम उसे भूल गये। हमें बख्श दो। हम पर दया करो। किसी अनुभवी भाई के पास बैठकर भूला हुआ सबक ताजा कर लो। उसकी तरफ मुंह करने की जरूरत है। वह सामने आ जायेगा। वह कहीं गया नहीं। हमारा उसकी तरफ मुंह नहीं रहा है। बात तो इतनी है। गुरु मरता नहीं। वह सदा अंग संग है तुम्हारे। सेन्टपाल कहता है -

It is I, no not I but Christ lives in me.

कि यह मैं हूं। नहीं, मैं नहीं बल्कि Christ, मसीह, मेरा गुरु, मेरे अन्तर में काम कर रहा है। हजूर बड़ा सुन्दर दृष्टान्त देते थे। फरमाते थे, कि चारपाई टूट जाए तो हम कहते हैं, ''बुलाओ तरखान (बढ़ई) को'', छत की कड़ी या किवाड़ खराब हो जाये तो हम कहते हैं ''बुलाओ तरखान (बढ़ई) को ।'' क्या अच्छा हो कि, हम तरखान को घर पर ही बुला ले, ताकि बार-बार उसे बुलाने की जरूरत न रहे। मतलब यह कि गुरु को अन्तर में प्रगट कर ले। हजूर फरमाते थे कि मुझे भाई, बुजुर्ग, कुछ भी कह लो, मेरे कहने के अनुसार अन्तर चलो। अन्तर गुरु की शान को देखकर जो चाहे कह लेना। बड़ी ऊंची हस्ती थी उनकी। हम उनकी गति को क्या जान सकते हैं, और क्या उनकी महिमा कर सकते हैं। जितनी जिसकी समझ थी उतना ही वह उस महापुरुष को देख और समझ सका। खुशकिस्मत हैं वह लोग जिन्हें उस महापुरुष के चरणों में बैठने का अवसर मिला है। वह सदा तुम्हारे अंग-संग सहाई है। तुम भले ही उसे छोड़ जाओ, वह तुम्हें नहीं छोड़ेगा। वह तो हमारा दावा भी फाड़ने को तैयार है।

दशम गुरु साहब के जमाने में एक बार लड़ाई के समय हालात बहुत खराब हो गये। गुरु साहब और उनके साथी किले में घिर गये। रसद के सारे रस्ते बन्द हो गये। उस समय कुछ लोगों ने सलाह की कि यहाँ किले में बंद होकर बैठने से बाहर निकलकर दुश्मन से लड़ना चाहिये। गुरु साहब ने फरमाया, कि जो अपनी मर्जी करना चाहे वह दावा लिखकर दस्खत कर दे, कि आज से न तू हमारा गुरु न हम तेरे शिष्य, और फिर वह जहां चाहें चला जाये। मैं किसी को रोकता नहीं। 40 आदमी ऐसे निकले जिन्होंने दावे लिखकर दे दिये और किले से बाहर निकल गये। घर गये तो उनकी पत्नियों ने बड़ी झाड़ डाली कि यह क्या कर आए हो। यदि यही कुछ करना था तो चूड़ियां पहन कर घर बैठो। हम तुम्हारी जगह लड़ेंगी। उन्हें शर्म आ गई। अपनी गल्ती महसूस हुई। घरो से निकले और दुश्मन से लड़ते-लड़ते शहीद हो गए। दशम् गुरु साहब वहां पहुंचे तो लाशें ही लाशें पड़ी थी। अब वह एक-एक का मुंह पोंछकर उसका सिर गोद में रख के कहते ''तू मेरा दस हजारी जरनैल है, तू मेरा बीस हजारी सूरमा है''। एक ऐसा था उनमें जिसमें थोड़ी जान बाकी थी। उसने आंख खोली तो देखा कि गुरु की गोद में सिर रखा है और वह बड़े प्यार से उसके सिर पर हाथ फेर रहे हैं। दशम् गुरु साहब ने फरमाया,''मांग क्या मांगता है ?''वह रो पड़ा। कहने लगा,''सच्चे पातशाह हम अधम नीच तेरे चरणों में बैठने लायक नहीं थे। हमारा अपराध क्षमा कर दे। वह जो दावा हमने लिखा है अपनी दया मेहर के सदके उस दावे को फाड़ दे।

हमारे हजूर फरमाया करते थे, कि अगर सिख ने कोई कसूर भी किया है तो आखिर मैंने ही उसे उठाना है। मैं उसे और क्यों गिराऊं? मैं तो उसे उठाने के लिये आया हूं न कि गिराने के लिये। ऐसे महापुरुष को देखना नसीब हुआ है जिन्हें वह खुशकिस्मत हैं। हज़रत मुहम्मद के जमाने में एक महात्मा थे, हज़रत जुन्नैद था उनका नाम। एक बार हज़रत मुहम्मद के पीछे वह उनके घर पर आए। सेवक ने आने पर खबर दी तो पूछा, ''तुमने उनके दर्शन किए थे ?'' सेवक बोला ''मैंने उनका चेहरा तो नहीं देखा। लौटते समय पीठ जरूर देखी थी।'' मुहम्मद साहब ने फरमाया, ''बड़े खुशकिस्मत हो तुम कि तुम्हें ऐसे महापुरुष की पीठ देखना नसीब हुआ है।''

आप में से बहुत से भाईयों को हजूर के चरणों में बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इस खुशकिस्मती को संभालों। उन्होंने नाम की जो दात तुम्हें बख्शी है उसे संभालो। यही सच्ची याद है उनकी। अगर यह नहीं करोगे तो कितने ही बाजे गाजे करो, जन्मदिन मनाओ, सब बेकार है। उनकी यादगार मनाने का मकसद (उद्देश्य) यही है कि जो सबक उन्होंने दिया है उसे ताजा किया जाय। इस रस्ते में गुरमुख होकर जाना पड़ता है। गुरु का ध्यान, उसकी याद करते करते शिष्य गुरु का रूप हो जाता है। फिर उसमें और गुरु में कोई भेद नहीं रहता।

अकबर बादशाह के वक्त की बात है। महात्मा भीक का एक शिष्य एक मस्त फकीर था। जो 'या भीक या भीक'' के नारे लगा रहा था। मन में जिसकी याद बसी हो कुदरती तौर पर उसी का नाम जबान पर भी रहेगा। वह शरीयत वालों (समाज धर्म) का जमाना था। उस मस्त फकीर को पकड़कर काजी की अदालत में उसका चालान पेश कर दिया गया। अदालत ने पूछा, ''भीक तेरा कौन है ?'' फ़कीर ने जवाब दिया, ''वह मेरा मुरशिद मेरा गुरु है ! अदालत ने पूछा, ''तेरा खुदा कौन है ? '' फ़कीर ने कहा, ''भीक''। तेरा रसूल ? ''मेरा रसूल, मेरा खुदा, भीक है'' फ़कीर ने कहा। काज़ी ने फ़कीर को कत्ल करने का फतवा (हुकम) दे दिया। अब यह कायदा है कि मौत की सजा के लिये बादशाह की मन्जूरी जरूरी है। अकबर बादशाह ने फ़कीर को पेश करने का हुक्म दिया। देखा, यह तो कोई मस्त फ़कीर है। आखिर बादशाह को भी खुदा से राह होती है। जिसे वह बाहर की बादशाहत देता है उसे थोड़ी बहुत आंख भी देता है। अकबर ने हुक्म दिया, ''इसे छोड़ दो।'' फिर फ़कीर से कहा, ''देश में वर्षा न होने के कारण अकाल का खतरा पैदा हो गया है। अगर थोड़े दिन और बरसात न हुई तो फसल मारी जायेगी। तू अपने गुरु भीक से सिफारिश कर दे कि वर्षा हो जाय। तेरी बड़ी मेहरबानी होगी।'' शिष्य को गुरु पर मान होता है। उसे पूरा विश्वास होता है उसकी सामर्थ्य पर क्योंकि वह अपनी आंखों से देखता है कि वह खुदा है। फ़कीर ने कहा मैं अपने गुरु से प्रार्थना करूंगा। उसी रात ऐसी वर्षा हुई कि जल थल एक हो गया। बादशाह फ़कीर के पास गया, उसका शुक्राना करने। आपने बड़ी कृपा की देश को अकाल से बचा लिया। यह दो गांवों का पट्टा ले लीजिये, गुरु के लंगर के खर्च के लिए। बादशाह ने कहा। ''मैं अपने गुरु के पास

यह नश्वर पदार्थ ले जाऊं ? हरगिज नहीं।'' फ़कीर ने बड़ी बेपरवाई से कहा। यह लोग अपने हाल पर मस्त रहते हैं। उन्हें सन्तोष है हर हाल में। यह बातें समझने की हैं उन लोगों के लिए जिन्हें इसी जन्म में आना-जाना खत्म करना है।

शिबली के पास दो आदमी उपदेश लेने के लिये आये। शिबली ने कहा ''कहो ला इला, इलिल्लाह! '' (कोई नहीं है सिवाय परमात्मा के) उन्होंने वैसे ही कहा। शिबली ने फिर कहा, ''कहो शिबली रसूल अल्लाह!'' (शिबली परमात्मा का रसूल, पैगम्बर, अथवा उसे पहुंचा हुआ है) उनमें से एक कानों पर हाथ रख कर बोला, तौबा, तौबा! यह तो कुफ्र का कलमा है (नास्तिकता का वचन है), शिबली साहब ने भी कान पर हाथ रख लिया और कहने लगे, ''तौबा, तौबा।'' शिष्य ने हैरान होकर कहा, ''मैंने तो इसलिये कानों पर हाथ रक्खा था कि आप मुझसे कुफ्र का कलमा बुलवा रहे थे। आपने क्यों कानों पर हाथ रक्खा ?'' शिबली ने जवाब दिया, ''मैंने इसलिये कानों पर हाथ रक्खा कि मैं ऐसे अनाधिकारी को उपदेश देने लगा था जिसे इतना भी भरोसा नहीं कि मैं भी खुदा का रसूल हूं। वह मुझसे लेगा क्या ? बात अनोखी है पर है सच्ची। जब पूरा गुरु मिल गया तो सारे पिछले महात्मा उसी में आ गये। जिसे पति मिल गया उसका विक्रमाजीत भी वही है, King George भी वही है।

गुरु की याद में नशा मिलेगा, रंग मिलेगा। यह बाहर की खुराक का मिलना है। पेड़ को अपने हाल पर छोड़ दिया जाय तो फलेगा तो सही, पर कई साल लग जायेंगे। यदि उसे Scientific तरीके पर, वैज्ञानिक खुराक दी जाये, तो वह जल्दी और अधिक फल लायेगा।

(8) कोई ऐसा गुरुमुख जे मिले, हौं तां के धोवां पाओं।

ऐसा कोई गुरमुख भी मिल जाय जिसके मन में सोते जागते, उठते बैठते गुरु की याद है। गुरु से जिसकी दिल को दिल से राह बन गई, ऐसा गुरुमुख मिल जाय तो फरमाते हैं, मैं उसके पांव धोऊंगा। गुरु Godman है, God परमात्मा जमा आदमी। जो Guruman गुरुमुख, बन गया तथा, वह भी Godman बन गया, क्योंकि गुरु में वह परमात्मा प्रकट है। फरमाते हैं, मैं ऐसे गुरुमुख के पांव धोऊंगा।

(९) जो दीसे गुरु सीखड़ा, तिस लिव लिव लागां पाए जियो।

गुरु का छोटे से छोटा सिख भी मुझे मिल जाये, तो मैं बार बार उसके पांव पर शीश नवाऊंगा। सवाल गुरुसिख बनने का है। दशम गुरु साहब से पूछा गया कि महाराज आपकी नजर में सिख कौन है ? उन्होंने जवाब दिया कि मेरे लिये तो सारी दुनिया सिख है। सिख का मतलब है, शिक्षा धारण करने वाला। हर आदमी पैदा होने से लेकर मरने तक कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। यह थी गुरु साहब की नजर में सिख की तारीफ। और आज क्या तारीफ है सिख की ? जो बाहरी चिन्ह चक्र धारण कर ले वह सिख है। अन्तर के जीवन से कोई मतलब नहीं। सो फरमाते हैं जो गुरुसिख बन जाय, गुरु से दिल दिल को राह बना ले, जो Guruman बन जाये, ऐसे सिख के मैं पांव धोऊंगा। गुरु और सिख दो नहीं।

गुरु सिख, सिख गुरु है, एको गुरु उपदेश चलाई ।

पूरा गुरु पूरा सिख होता है, और ऐसे गुरु और सिख में कोई भेद नहीं रहता। वह गुरु का रूप हो जाता है। बात यह है कि गुरु और परमात्मा दो नहीं। गुरु परमात्मा का बाहरी हाथ है जो हम तक पहुंचता है।

दस्ते ऊ दस्ते खुदा, चश्मे ऊ मस्ते खुदा।

उसका हाथ परमात्मा का हाथ है। उसकी आँखें प्रभु के नशे में चूर है। वह Pole है जिसमें प्रभु की ताकत काम करती है, दुनिया को समझाने बुझाने के लिये। बाहर वह भाई बनकर, उस्ताद बनकर हमें समझाता है, कि भाई चलो अन्तर। बाहर से हटो। वह प्रभु प्रीतम तुम्हारे अन्तर है। वह साथ में पूर्ण युक्ति और मदद भी देता है। ऐसे महापुरुष किसी देश या समाज से बन्धे नहीं होते। वह सारी मनुष्य जाति को एक जाति समझते हैं।

मानुस की जात सभै एक पहिचानिबो ।

(दशम गुरु ग्रन्थ)

ऐसे महापुरुषों के यहां कौमों और मजहबों का, धर्म और जाति का सवाल नहीं। वह न तो कोई नई समाज बनाते हैं, न बनी बनाई किसी समाज को

तोड़ते हैं। हजूर के चरणों में हजारों आदमी जाते थे। इनमें हिन्दू , मुसलमान, सिख, ईसाई सभी धर्म और जातियों के लोग होते थे । पर वहां, उस मण्डल में, किसी को होश तक न रहता था कि हम कौन हैं। अनुभवी पुरुष कहता है, कि तुम जिस समाज में पैदा हुए, उसी समाज में रहो पर जो मुख्य उद्देश्य है मनुष्य जीवन का, कि आत्मा को मन इन्द्रियों से आजाद करके अपने आपको जानो, और प्रभु को पहिचानो, यह काम किसी पूर्ण पुरुष से हिदायत लेकर पूरा कर लो। सभी महात्मा इसका इशारा देते आए हैं। कबीर साहब फरमाते हैं -

कहे कबीर हम धुर घर के भेदी, लाए हुकम हजूरी ।

सब महात्माओं का यही एक मिशन है। वह परमात्मा के भेजे हुए आते हैं। रूह को मन इन्द्रियों से आजाद करके उसे अपने आपकी सूझत देना, और परमात्मा से जोड़ना उनका काम है। वह लोगों को अपने साथ नहीं, परमात्मा के साथ जोड़ते हैं। अपनी तवज्जा का उभार देकर आत्म रस का तजरबा कराते हैं। अगर तुम पूरे महत्मा के चरणों में जाते हो तो तुम इस बात का जवाब देने के काबिल हो जाते हो कि अन्तर में दिव्य मंडल हैं कि नहीं। महात्मा के पास सारे परमार्थ के लिये नहीं जाते। कोई मान बड़ाई चाहता है, कोई रुपया, कोई और स्वार्थ को लिये हुए है दुनियां का। परमार्थ के लिए तो मुश्किल से एक फीसदी लोग जाते हैं महात्मा के पास। यह उपदेश उनके लिये है जिन्हें निरोल (खालिस) परमार्थ की चाह है। वैसे वह समरथ पुरुष है। उसके दर पर किसी चीज की कमी नहीं। पर बादशाह के पास जाकर ठीकरियां मांगी तो क्या माँगा? महात्मा के पास जाकर वह चीज मांगों, जिसे देने के लिये वह संसार में आते हैं। उनके पास क्या है ? वह कौन है, और हमारे लिये क्या करते हैं। इसका निर्णय स्वामीजी महाराज ने एक शब्द में किया है, जिस पर हम अभी विचार करेंगे। महात्मा की याद में बैठने का मतलब यही है कि उनके उपदेश को समझो। समझो ही नहीं धारण करो। हमें कुछ न कुछ व्यक्तिगत अनुभव तो होना चाहिये, चाहे रुपये में चार आने ही सही। गवाही तो दे सको। सिर तो हिला सको। न अन्दर गये, न गुरु मिला, न उसके मण्डल से ताल्लुक आया, जबानी जमा खर्च और बातों के पकवान पकाने का क्या फायदा है। ❐

भारत में डेमोक्रेसी का विकास अपूर्ण'

अखिल भारतीय वोटर्स कौंसिल के जलसे में श्री सन्त कृपालसिंह जी महाराज, श्री मुरार जी देसाई और सरदार हुकमसिंह जी के भाषण

आल इन्डिया वोटर्स कौंसिल का पहला आम जलसा, 30 जुलाई, शाम के 6 बजे, पटेल भवन, नई दिल्ली में श्री सन्त कृपालसिंह जी महाराज की अध्यक्षता में हुआ। कौंसिल के जनरल सेक्रेटरी, श्री राधेश्याम जी ने मतदाताओं की शिक्षा के बारे में कौंसिल के उद्देश्य की व्याख्या करते हुए बताया कि कौंसिल इस बारे में पक्षपात व धड़ेबन्दी से अलग रहकर एक Non-party organisation की हैसियत से काम करेगी और मतदाताओं को उनकी जिम्मेदारियों और अधिकारों का ज्ञान कराने और निर्वाचन पद्धति में सुधार के बारे में सभी पार्टियों के नेताओं से राय लेगी। सितम्बर में (तारीख अभी निश्चित नहीं हुई) वोटर्स कौंसिल की Conference में सब पार्टियों के परामर्श से, इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये प्रोग्राम तय किया जाएगा ।

श्री राधेश्याम ने कहा कि श्री सन्त कृपालसिंह जी महाराज जैसे विश्व-विख्यात, आध्यात्मिक महापुरुष का आशीर्वाद और पथ प्रदर्शन और लोक सभा के स्पीकर, सरदार हुकमसिंह जी का सक्रिय सहयोग कौंसिल को शुरू से प्राप्त है, जो इसकी सफलता को द्योतक है ।

जलसे का उद्घाटन करते हुए सरदार हुकमसिंह जी ने कहा कि भारत में डेमोक्रेसी के लिये एक ऐसा नाजुक वक्त आ गया है, कि बहुत से लोगों को क्रान्ति की आशंका पैदा हो गई है। यह ठीक है कि हमारे देश में दो चुनाव हुए, दोनों शान्तिपूर्ण ढंग से हुए, कहीं, दंगा नहीं हुआ। बाहर वालों से भी हम यह बात कह सकते हैं और अपने आप में यह कोई छोटी बात नहीं । पर इसके विरूद्ध हम देखते हैं, कि निर्वाचन के समय जात-पात का, कौम और मज़हब का भेद-भाव चलता है, रुपया भी चलता है। संविधान में हरेक बालिग़ को मतदान का अधिकार दिया गया है। Qualification मुकर्रर नहीं की गई मतदाता की, जिसके फलस्वरूप 22 करोड़ व्यक्तियों को इस देश में मतदान का अधिकार प्राप्त है। इनमें 75 प्रतिशत से अधिक मतदाता अशिक्षित

हैं। उन्हें अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों का ज्ञान नहीं, चुनाव में कोई Sense of participation नहीं। इन वोटरों को हमें शिक्षा देना है, निर्वाचन तथा मतदान की पद्धति में सुधार करना है, मतदाता की क्या Qualification हो, चुनाव में खड़े होने वाले की क्या Qualification हो —यह सारी बातें Party politics से ऊपर उठकर हमें सोचना है। ब्रिटेन में डेमोक्रेसी को 700 वर्ष हो गये । औरतों को और बहुत से दूसरे वर्गों को मतदान का अधिकार मिले 30-40 वर्ष से ज्यादा समय नहीं हुआ और वह भी तीव्र संघर्ष के बाद। इसके विरूद्ध हमारी डेमोक्रेसीको 20 वर्ष भी पूरे नहीं हुए और उसकी शुरुआत ही हर बालिग़ को मतदान के अधिकार से हुई है। तो इस सिलसिले में बड़ा काम करने को पड़ा है, और यह काम शिक्षित वर्ग को करना है। हरेक पार्टी के नेताओं का सहयोग हम चाहते हैं,पर पार्टीबाज़ी से ऊपर उठना आसान नहीं। सन्त कृपालसिंहजी महाराज की बात मैं नहीं कहता। वह रूहानी पुरुष हैं, और हर प्रकार के भेद-भाव और पक्षपात से रहित हैं उनके लिये सब समान हैं। परन्तु हम, जो पार्टियों से बन्धे हैं, पूरी तरह इस बन्धन से आज़ाद नहीं हो सकते।

भारत में डेमोक्रेसी की अधोगति का ज़िक्र करते हुए सरदार हुकमसिंह जी ने कहा, कि अशिक्षित लोग रुपये से वोट खरीदें तो और बात है, लेकिन इसको क्या कहियेगा कि अभी थोड़ा समय हुआ राज्य सभा के चुनाव में एक उम्मीदवार ने रुपये से एसेम्बली के सदस्यों के वोट खरीदे। खरीदार राज्यसभा का सदस्य है, जिसे आप अशिक्षित या गैर-जिम्मेदार नहीं कह सकते, और वोट बेचने वाले थे एसेम्बली के मेम्बर। ग्राहक और विक्रेता दोनों के लिये यह बड़ी शरम की बात है। हमें, सबको, मिलकर, इसका उपाय सोचना है कि आगे ऐसा न हो। दबाव में आकर धड़ेबन्दी या ज़ात-पात के लिहाज़ से या रुपये के लालच में कोई अपना वोट न बेचे।

श्री मुरारजी देसाई ने कहा कि भारत की जनता का अधिक भाग अशिक्षित है, और ग्राम निवासी है। शहर के अंग्रेजी पढ़े, शिक्षित वर्ग के लोग, उन्हें शिक्षा देने की बात जब सोचते हैं, तो उन्हें पहले आप शिक्षा लेनी पड़ेगी। संविधान में हरेक बालिग को राय देने का निर्णय खूब सोच विचार कर किया गया है। शिक्षा की बात को लें तो अशिक्षित भी इतना तो जानता ही है कि कौन ईमानदार है और कौन बे-ईमान। यदि हम उसे निर्भय कर सकें तो वह अपने वोट का सही इस्तेमाल कर सकता है। भ्रष्टाचार, बेईमानी, घूसखोरी, ज्यादातर शिक्षितों में पाई जाती है। रिश्वत लेने वालों

आप ज्यादातर बड़ी तनख्वाह पाने वाले लोगों को देखेंगे। ब्लेक मारकीट करने वाले बड़े-बड़े पूंजीपति लोग होते हैं, तो मुझे यही कहना है, कि जो लोग वोटर को सिखाने चले हैं, उन्हें पहले खुद को सीखना पड़ेगा। और सबसे पहली बात है कि हम उस भाषा में सोचें और बात करें, जो सर्वसाधारण की भाषा है, जिसे अशिक्षित ग्रामीण भी समझ सकता है ।

हमारे देश में डेमोक्रेसी नई नहीं। बहुत पुराने ज़माने से गणराज्य इस देश में चला आता है। पंचायत का विधान हज़ारों साल से चला आता है। हरेक में आत्मा का अस्तित्व हम मानते हैं। हरेक व्यक्ति को आत्मोन्नति और विकास का समान अधिकार है, और उसके लिये मनचाहा मार्ग चुनने का भी, ऐसा हम मानते हैं। डेमोक्रेसी के लिये इससे ज्यादा पक्की नींव क्या होगी ? बात यह है यह जो नई डेमोक्रेसी आज़ादी के बाद आई है इसकी जड़ें अभी मज़बूत नहीं हैं। मतदान का अधिकार तो मिला सबको, पर उसकी कीमत क्या है, यह सबको मालूम नहीं। केवल शिक्षा की बात नहीं, इस देश के गरीब लोग, हीन वर्ग के लोग, तरह-तरह से दबे हुए हैं। वह जल्दी ही लालच और दबाव में आ जाते हैं। उन्हें हर प्रकार से निर्भय करना होगा। तभी वह वोट का सही प्रयोग कर सकेंगे। इस समय हमारी डेमोक्रेसी सरकार के बल पे खड़ी है, जनता के सहारे नहीं, और जब तक सरकार कांग्रेस पार्टी के हाथों में है, डेमोक्रेसी यहां रहेगी, इसमें मुझे कोई सन्देह नहीं। सब पार्टियों के लोग मिलकर बैठें और निष्पक्ष रूप से मतदान और निर्वाचन में सुधार की बात सोचें, मुझे ऐसी सम्भावना दिखाई नहीं देती। फिर भी हमें इतना तो करना ही होगा कि सब मिलकर ऐसा एक Code व्यवहारिक नियम बनायें कि चुनाव का खर्च कम हो, कोई उम्मीदवार धर्म, जात-पात, कौम या प्रान्तीयता का सवाल न उठाये, रुपये से या दबाव से वोट प्राप्त न किये जाये। मतदाता को अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों से परिचित कराना बहुत बड़ा काम है। पार्टियों के सदस्य निष्पक्ष रूप से ऐसा कर सकेंगे, इस बारे में मुझे सन्देह है। जब तक आप निष्पक्ष रूप से, किसी एक या दूसरी पार्टी के दबाव में न आकर काम करेंगे, उस वक्त तक मेरा सहयोग आपके साथ है। सन्त कृपालसिंह जी महाराज जैसे आद्यात्मिक महापुरुष का सक्रिय सहयोग और आशीर्वाद आपके साथ है, इसलिये उम्मीद होती है कि आपका उद्देश्य पूरा होगा।

श्री सन्त कृपालसिंह जी महाराज ने कहा कि बीस साल के पुराने खिलाड़ी, जो डेमोक्रेसी के ऊंच-नीच को समझते हैं वह भी आज इस बात को महसूस कर रहे हैं, कि हमारी Democracy अभी अधूरी है, और उसमें सुधार की ज़रूरत है। कुरान

शरीफ़ में आता है कि खुदा उस कौम की हालत को नहीं बदलता, जिसे आप अपनी हालात को बदलने का ख्याल नहीं है। तो यह जो एहसास आज पैदा हो रहा है Democracy की अपूर्णता का, उसमें सुधार का, यह Awakening प्रभु की तरफ़ से है, और सबूत है इस बात का, कि हालात ज़रूर सुधरेंगे। हिन्दुस्तान के नागरिक होने के नाते मुझे इस मामले में दिलचस्पी है, और मैं चाहता हूं कि सच्ची डेमोक्रेसी अर्थात् ''जनता का राज्य जनता के लिये,'' ऐसा गण राज्य यहां कायम हो और उसकी जड़ें मज़बूत हों, जिससे सबके लिये सुख का कारण बने।

बे-ईमानी, रिश्वतखोरी वगैरह जो ख़राबियां हम देखते हैं, उसका कारण यही है, हम सही मानों में इन्सान नहीं बने। इन्सान नाम है आत्मा देहधारी का। इन्सान-इन्सान सब एक हैं। इन्सान शरीर रखता है, बुद्धि रखता, और आत्मा रखता है। तीनों पहलुओं से जो मुकम्मल हो वही सही मानों में इन्सान है। शरीर करके और बुद्धि या Intellect करके बड़ी भारी तरक्की हम ने की, पर आत्मा के मुतल्लिक हम कुछ नहीं जानते हालांकि — On the spiritual health depends the health of body and mind both अगर हम सही मानों में इन्सान बन जायें, अपने आपको (शरीर रूपी मकान के निवासी, आत्मा को, जो हमारा अपना आप है) जान लें, सबमें एक (प्रभु) को, और एक में सबको देखने वाले हो जायें, तो फिर कौन किसी का गला काटेगा, कौन किसी को धोखा देगा ? यह दुश्मनी, बख़ीली, धड़ेबन्दी कहाँ रहेगी ?

पुराने ज़मानों में इसीलिये राजाओं के सलाहकार ऋषि-मुनि हुआ करते थे। वह शासन और प्रजा के बीच एक कड़ी का काम करते थे। अब भी किसी उम्मीदवार की अच्छाई बुराई का फैसला रूहानी पुरुष ही कर सकते हैं और वही हर प्रकार के डर, दबाव या लालच से आज़ाद होकर फैसला दे सकते हैं। वोटरों को वोट देने के बारे में अपनी जिम्मेदारी का एहसास कराने और चुनाव की खराबियों को दूर करने का काम निहायत जरूरी है। मैं समझता हूं सब भाई इस मामले पर मिल के विचार करें, कमेटियां चुनी जायें जो इस बारे में सुझाव तैयार करे, जिस पर सितम्बर में होने वाली कान्फ्रेन्स में विचार कर के एक बाकायदा प्रोग्राम नये चुनाव से पहले तैयार कर लिया जाए।

इसके बाद दिल्ली क्षेत्र के सेक्रेटरी ने वक्ताओं का शुक्रिया अदा करते हुए श्री मुरारजी भाई देसाई को विश्वास दिलाया कि वोटर्स कौंसिल पार्टीबाजी से अलग, निष्पक्ष रूप से काम करेगी, किसी एक या दूसरी पार्टी के दबाव में नहीं आयेगी । ❐